International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
e-ISSN :2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 01(II), January - March, 2026, pp. 276-280

आषाढ़ का एक दिन की भावनात्मक भाषा

समय सत्य प्रधान*

शोधार्थी, हिन्दी साहित्य, ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, वेदांत ज्ञान वैली, महला जयपुर, राजस्थान।

*Corresponding Author: pradhansamaysatya@gmail.com

Citation: प्रधान, समय (2026). आषाढ़ का एक दिन की भावनात्मक भाषा. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science, 08(01(II)), 276–280. https://doi.org/10.62823/IJEMMASSS/8.1(II).8881

सार

किसी भी कृति के लिए भाषा सबसे महत्त्वपूर्ण है और जब वह भावना प्रधान हो तो उसका असर सीधे पाठकों के हृदय पर होता है। आषाढ़ का दिन नाटक भावनात्मक नाटक है अर्थात उसकी भाषा भी उसी के अनुसार चुनी गई है संवाद भी वैसे ही लिखे गए हैं। साहित्य में रस का कार्य पाठकों का कृति से भावनात्मक सम्बन्ध स्थापित करना है। लेखक मोहन राकेश ने भी इस कृति में करुणा और श्रृंगार रस का उपयोग कर इस कृति को एक भावनात्मक भूमि प्रदान की है। इसलिए दर्शक और पाठक इस कृति से अपना जुड़ाव महसूस करते हैं।

शब्दकोश: *आषाढ़ का एक दिन, भावनात्मक भाषा, रस निष्पत्ति, मोहन राकेश, नाट्यशास्त्र।*

प्रस्तावना

मानव जीवन में अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए मानव सदा अभिव्यक्ति के साधन खोजता रहा है। जब वह भाषा से परिचित नहीं था तब वह चित्रों के माध्यम से अपने भावों को व्यक्त किया करता था। जब उसका भाषा से परिचय हुआ तब अलग–अलग साधनों का आविष्कार भी हुआ। जिसमें दृश्य काव्य और श्रव्य काव्य भी शामिल है। दृश्य काव्य में नाटक की परंपरा भरतमुनि से मानी जाती है। नाट्यशास्त्र के सन्दर्भ में एक कथानक प्राप्त होता है जो इस प्रकार है "जब देवों को मनोरंजन के साधन की आवश्यकता थी तब उन्होंने भरतमुनि से प्रार्थना कीय तब भरतमुनि ने पंचम वेद रूप नाट्यशास्त्र की रचना की"।[1] ऋग्वेद से संवाद, सामवेद से गीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रस ग्रहण किया।[2] और यहीं से नाट्यशास्त्र की परंपरा का आरंभ हुआ।

नाट्यशास्त्र की रचना 400 ईसा पूर्व में हुई और यह परंपरा फिर अनवरत रूप से चलती रही। नाटक की व्युत्पत्ति – नाट्यते अभिनयत्वेन रूप्यते इति नाट्यम् इसका अर्थ है कि अभिनय के द्वारा नाटक किया जाता है। संस्कृत के नाटकों की रचना धार्मिक कथाओं के माध्यम से हुई है। और अगर हम हिंदी भाषा के नाटकों के बारें में चर्चा करें तो वे अधिकतर संस्कृत नाटकों के अनुवाद के रूप में लिखे गए परंतु जब भारतेंदु का जन्म हुआ और उन्होंने हिंदी में मौलिक नाटक लिखने की शुरुआत की तब से ही हिंदी नाटक परंपरा की शुरूआत मानी जाती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कहा है ष्वलक्षण बात यह है कि आधुनिक साहित्य की परम्परा का प्रवर्तन नाटकों से हुआ। [3] भारतेंदु के द्वारा अनेक मौलिक और अनूदित नाटकों की रचना हुई और उनके बाद

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

यह परंपरा अनवरत रूप से चलती रही। यहां एक बात उल्लेखनीय है की आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने जब हिंदी नाटकों के कालों का अध्ययन किया तब प्रथम उत्थान में भारतेंदु युग को स्थान दिया। उसके पश्चात् द्विवेदी युग, प्रसाद युग, प्रसादोत्तर नाटक और समकालीन नाटक।[4] इस लेख में हम जिसकी व्याख्या कर रहे हैं, उस नाटक का नाम है "आषाढ़ का एक दिन" जो मोहन राकेश जी द्वार रचित है। यह नाटक पंचम उत्थान में है और यह नाटक 1958 में लिखा गया था। नाटक को संगीत नाटक अकादमी द्वारा भी पुरस्कृत किया गया। इस प्रकार नाटक की परंपरा अब तक चल रही है।

आषाढ़ का एक दिन मोहन – राकेश द्वारा 1958 में लिखा गयां। "आषाढ़ का एक दिन" कालिदास के जीवन पर आधारित है। परन्तु ये कोई ऐतिहासिक नाटक नहीं बल्कि एक काल्पनिक नाटक है। जिसकी कहानी आषाढ़ की पहली वर्षा से शुरू होती है और अंत भी आषाढ़ की वर्षा पर ही होता है। इसलिए इसका नामकरण भी इसी आधार पर किया गया है। इसमें यथार्थ और भावना का द्वंद्व[5] एवं मल्लिका के निर्दोष प्रेम को दिखाया गया है। नाटक को तीन अंको में विभाजित किया गया है। जिनमें अनेक पात्र हैं जैसे अंबिका, मल्लिका, कालिदास, दंतुल, मातुल, निष्कर्ष, विलोम, रागिनी, संगिनी, अनुस्वार, अनुनासिक, प्रियंगुमंजरी। इन्ही पात्रों के साथ नाटक की कथा चलती है। इस नाटक को हम यथार्थवादी नाटक की श्रेणी में देखते हैं। अहम्निष्ठ पुरुष एक सात्विक प्रेम करने वाली मल्लिका को किस तरह छोड़ कर चला जाता है। इसमें जीवन के यथार्थों के साथ हमें कई तरह के द्वन्द्व भी दिखलाई पड़ते हैं। जिसमें कला और राजनीति का द्वन्द्व एवं अहम् और प्रेम का द्वन्द्व मुख्य है। भावों की तीव्रता और सघन अभिव्यक्ति पात्रों के संवाद में स्पष्ट परिलक्षित होती है। जो दर्शक और पाठक के हृदय पर स्पष्ट प्रभाव डालती हुई नजर आती है। आषाढ़ का एक दिन नाटक परंपरा नाटकों से हटकर यथार्थ का चित्र प्रस्तुत करता है और मौलिकता को लिए हुए दर्शकों और पाठकों के चित्त पर एक प्रभाव छोड़ चला जाता है। यह कहानी आषाढ़ के एक दिन से शुरू होती है, जहां कालिदास और मल्लिका भीगते हुए पर्वत प्रदेश में आनंद के पल व्यतीत करते हैं। एक दिन कालिदास को उज्जयिनी से बुलावा आता है और राजकवि की पदवी संभालने के लिए कहा जाता है, परन्तु कालिदास अपने ग्राम प्रदेश को छोड़ना नहीं चाहते थे जबकि मल्लिका उनकी प्रतिभा का विकास चाहती थी, इसलिए वियोग को स्वीकार करते हुए भी वे कालिदास से आग्रह करती हैं कि आप उज्जयिनी जायें। कालिदास उज्जयिनी जाते हैं और कई वर्ष तक वापस नहीं आते हैं। मल्लिका यहाँ एकाकी जीवन जीते हुए एक दिन विलोम से विवाह कर लेती है। कालिदास जब वापस आकर मल्लिका को विलोम के साथ देखते हैं तब समय को बलवान जान अपनी नियति को स्वीकार कर लेते हैं और इस तरह नाटक समाप्त हो जाता है।

भावनात्मकता का आधार रस– वाक्यं रसात्मकं काव्यम्[6] आचार्य विश्वनाथ रस युक्त वाक्य को ही काव्य कहते हैं। इस परिभाषा से रस की स्थिति और महत्ता ख्याल में आती है। यह रस संप्रदाय भी भरतमुनि की देन है अर्थात रस संप्रदाय के प्रवर्तक आचार्य भरतमुनि ही हैं। उन्होंने रस सूत्र में लिखा है – विभावानुभाव व्यभिचारी भाव संयोगात् रस निष्पत्ति[7] अर्थात विभाव, अनुभाव और व्यभिचारी भावों के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। भरतमुनि का कहना है कि भोजन, व्यंजन और औषधि के मिलने पर ही भोजन का रस मिलता है। उसी प्रकार स्थिर भाव भी नाट्य में रस प्राप्त करते हैं। उन्होंने रस को अनुभव योग्य माना है।[8] यहां रस के चार अवयव हैं – विभाव, अनुभाव, स्थायी, व्यभिचारी भाव। विभाव – जो स्थायी भाव को प्रगति करने में मदद करता है एवं उत्तेजित करता है, वह सभी विभाव हैं। विभाव दो प्रकार के होते हैं – आलम्बन विभाव और उद्दीपन विभाव। अनुभाव – स्थायी भाव के उत्पन्न होने के अवसर पर जो शारीरिक और मानसिक विकार दृष्टिगत होते हैं, उन्हें अनुभाव कहा जाता है। अनुभावयन्ति इति अनुभावः अनुभाव के चार भेद हैं – आंगिक, मानसिक, आहार्य, सात्विक।[9] संचारी या व्यभिचारी भाव – जो भाव स्थायी भाव को पुष्ट करने में सहायक हों उन्हें संचारी या व्यभिचारी भाव कहते हैं। स्थायी भाव – जो भाव हृदय में स्थायी रूप है से और किसी भी भाव के संयोग होने पर प्रकट हो जाते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 11 है।

भावना का अर्थ

मनुष्य के भीतर विद्यमान विभिन्न प्रकार के भाव जैसे सुख, दुख, करुणा, शोक, भय, जुगुप्सा आदि – और जब इन भावों से युक्त कृति होती है तो वह भावानात्मक हो जाती है। और जिस भाषा के माध्यम से ये भाव प्रकट होते हैं, वह भाषा भावानात्मकता लिए होती है और इन्ही भावों को प्रकट करने में रस सहायक होता है। रस का एक अंग अनुभाव है और यही अनुभाव ही भावनाओं की प्रगटता है। अगर हम इसे व्यंजना व्यापार के रूप में देखें तो जब कोई व्यक्ति किसी कृति को पढ़ता है या किसी नाटक को देखता है तब उसके हृदय में जो व्यापार होता है, वह उसका हृदय में द्रवीभूत हो जाता है, उसको ही व्यंजना व्यापार कहा जाता है। उदाहरण के तौर पर जैसे मिर्च के चखने पर मुँह लाल और आँखों से पानी आता देखा जाता हैय ठीक उसी प्रकार। वृक्ष किसी भूमि पर उगते हैं और अगर भूमि न हो अर्थात आधार न हो तो वृक्ष का अस्तित्व खड़ा नहीं हो सकता, ठीक उसी प्रकार भावोंकी भूमि पर ही रस का परिपाक होता है। भावनात्मक भूमि न हो तो रस की उत्पत्ति भी असम्भव है। अब हम अलग–अलग रसों के आधार से भावनाओं को समझते हैं। श्रृंगार रस में आकर्षण, प्रेम, मिलन, विरह, वीर रस, उत्साह, जोश, पराक्रम आदि उस रस की भावना हैं। उसी प्रकार अन्य रस आदि भी समझ लेने चाहिए।

आषाढ़ का एक दिन में रस संयोजन

जब किसी नाटक को लिखा जाता है या किसी नाटक का मंचन किया जाता है तो रस उसमें प्राण डालने का कार्य करते हैं, भावनात्मक आधार प्रदान करते हैं और अगर उसमें रस न हो तो वह घटना का वर्णन मात्र रह जाएगा। जिस तरह किसी फल में रस न हो तो वह निस्सार है और उसका मूल्य कुछ नहीं बचता, उसी प्रकार रस ही कृति का भावनात्मक मूल्य है इसलिए वे महत्त्वपूर्ण हैं। "आषाढ़ का एक दिन" एक ऐसी कहानी है जहां प्रेम निःस्वार्थ समर्पित होता हुआ दिखता है। प्रेम के बदले में नायिका अपने लिए कुछ नहीं करता बल्कि प्रेम की खातिर अपने साथी की उन्नति की कामना करती है यद्यपि उसकी उन्नति में उसकी अवनति है, प्रेमी का वियोग है परंतु प्रेम इतना निश्चल है कि ये सब होते हुए भी उसे सब सुखद लगता है और यही सब नाटक को भावनात्मक आधार देता है।

इस नाटक के संवाद में एक – एक वाक्य भावनाओं से प्रेरित है और सहृदय के मन पर सीधे प्रभाव डालता हैं। यहां हम कुछ संवाद उदाहरण के माध्यम से देख सकते हैं –– मल्लिका – मैंने भावना में एक भावना का वरण किया है, मेरे लिए वह संबंध और सब संबंधों से बड़ा है। मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूं जो पवित्र है, कोमल है और अनश्वर है।[10] यहां मल्लिका ने कालिदास से प्रेम की बात नहीं की बल्कि कालिदास में निहित वह भावना जो उसे कालिदास बनाती है उसकी बात की है और वह कहती है कि मैंने भावना का वरण किया और यह वरण अन्य दैहिक आदि संबंधों से बहुत ऊपर, कोमल, पवित्र है और इसकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती है। और वही मल्लिका के माँ का चरित्र वास्तविकता में प्रकट करता है और वह इस भावना को छलना कहती है परन्तु मल्लिका अडिग हैं। जीवन में क्या आवश्यकताएं होती हैं, आगे जीवन में क्या होगा, उसे कुछ फर्क नहीं पड़ता क्योंकि उसने प्रेम को भावनाओं में स्वीकार किया है। एक माँ की चिंता अंबिका में नजर आती है और वह अपनी बेटी को समझने के प्रयासों में जो वाक्य प्रयोग कहती है वह भी दर्शक पर कुछ अलग ही प्रभाव छोड़ कर जाते हैं। जैसे की अम्बिका का यह कथन – अंबिका – किसी संबंध से बचने के लिए अभाव बड़ा कारण बन जाता है, परंतु अभाव की पूर्ति उससे भी बड़ा कारण बन जाता है"।[11] अंबिका का आशय यह है कि तुम भले ही कालिदास को भावनाओं से स्वीकार कर चुकी हो परंतु उन्होंने तुम्हें स्वीकार नहीं किया है। वे अभाव का बहाना बना कर इस संबंध से बच रहे हैं और जब ऐश्वर्य संपन्न होंगे तो क्या तुम्हें याद रखेंगे? जब यह बात अंबिका करती है, तब दर्शकों के मन में भी यह बात लगती है कि क्या कालिदास मल्लिका के बारे में भी वैसा ही सोचते हैं जैसा मल्लिका उनके बारे में सोचती है। क्या कालिदास उज्जयिनी जाकर सच में मल्लिका को भुला देंगे और इसी कारण दर्शकों की निष्ठा मल्लिका पर और भी बढ़ जाती है। "प्रेम जब उच्च भूमि पर पहुंचता है तब वह जीवन के सारे सुख होम कर देता है।"

उसका उदाहरण मोहन राकेश प्रस्तुत करते हैं –– मल्लिका – माँ, आज तक जीवन किसी तरह बीता ही है। आगे का भी बीत जाएगा। आज जब उसका जीवन एक नई दिशा ग्रहण कर रहा है, मैं उनके सामने अपने स्वार्थ की घोषणा नहीं करना चाहती।[12] मल्लिका सिर्फ कालिदास की प्रतिभा का विकास चाहती हैं, और कुछ भी नहीं। अपने सारे स्वार्थों का त्याग कर सिर्फ प्रेम के लिए समर्पित होना चाहती है। कुछ संवाद नाटक में ऐसे है जो दर्शकों को बांधे रखते हैं और दो प्रेमियों के बीच कैसा संबंध होता है, उसका आदर्श प्रस्तुत करते हैं। कालिदास जब अपनी जन्मभूमि को छोड़ कर नहीं जाना चाहते हैं और कहते हैं कि राजाश्रय से बड़ा प्रश्न तुम्हें छोड़ कर जाने का है, तब भी मल्लिका अपने मन की स्थिति बताकर कहती है कि इतना सब होगा उसके बावजूद मैं चाहूंगी कि आप उज्जयिनी जाएं। मल्लिका – तुम समझते हो कि तुम इस अवसर को ठुकराकर यहां रहोगे तो मुझे सुख होगा? आंसुओं को छुपाते हुए कहती जाती है – मैं जानती हूं कि तुम्हारे चले जाने से अंतर में एक रिक्तता छा जाएगी । बाहर भी संभवतः बहुत सूना प्रतीत होगा फिर भी मैं अपने साथ छल नहीं कर रही।[13] जो चित्र लेखक ने खींचा है उससे दर्शक भी भावुक हो जाते हैं। एक ऐसा दृश्य जहां अश्रु भरी आंखों से भी नायिका मुस्कुराने का प्रयास कर आंसू छुपाती है और कहती है कि कालिदास तुम्हें जाना चाहिए, यह जानते हुए भी कि उसके जाने के बाद मल्लिका की क्या हालत होगी, तब भी वह जाने को कहती है। इसके साथ कालिदास उज्जयिनी चले जाते हैं।

बहुत समय तक उनकी खबर नहीं आती है। बहुत दिनों के अंतराल के बाद दो आकृतियां दिखती हैं। निक्षेप बताता है कि शायद कालिदास यहाँ पधारे हैं। इस दृश्य को देख कर दर्शकों के मन को आघात पहुंचता है। क्यों? क्योंकि कालिदास ग्राम में आए और मल्लिका से मिलने भी नहीं आए। तब दर्शकों के मन में वह बात दोहरा जाती है कि अभाव की पूर्ति संबंध से बचने का सबसे बड़ा कारण बन जाता है" और एक बार फिर दर्शक मल्लिका के समान अनुभव कर भावुक हो जाते हैं। मल्लिका सब कुछ स्वीकार करने के साथ–साथ कोई भी शिकायत बिना अपना जीवन यापन कर रही थी परंतु उसके हृदय को चोट उस समय लगती है जब मातुल उसे बताता है कि कालिदास ने संन्यास ले लिया है। उस समय वह जो वाक्य कहता है वह बहुत मार्मिक है और हृदय को आर्द्र कर देता है। मल्लिका – यद्यपि तुम मेरे जीवन में नहीं रहे परंतु तुम मेरे जीवन में सदा बने रहे हो, मैंने कभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे और मैं समझती रही, मेरे जीवन की भी कुछ उपलब्धि है। और आज तुम मेरे जीवन को इस प्रकार निरर्थक कर दोगे।[14] यहां संवाद सुनकर लगता है जैसे मल्लिका का विश्वास और प्रेम टूट रहा हो, वह कामजोर पढ़ रही हो, क्योंकि जिसके लिए वह जी रही थी वह भावना ही खत्म होती दिखाई देने लगी।

अंत में एक और संवाद जो कालिदास और मल्लिका के बीच में होता है वह दर्शकों को एक बार पुनः भावुक कर देता है जिसमें मल्लिका ने कालिदास के लिए पृष्ठों का निर्माण किया था, उन पृष्ठों को लेकर कालिदास जो वर्णन करते हैं, वह अत्यंत मार्मिक है। कालिदास –स्थान –स्थान पर पानी की बूदें पढ़ी हैं जो निरूसंदेह वर्षा की बूंदें नहीं हैं। लगता है तुमने अपनी आंखों से इन कोरे पृष्ठों पर बहुत कुछ लिखा है..... इन पर एक महाकाव्य की रचना हो चुकी है..... अनंत सर्गों के एक महाकाव्य की।[15] यहां पर कालिदास उनके अभाव में बीते मल्लिका के दिनों की दशा को उन पन्नों से जान लेते हैं और तब ऐसा महसूस होता है कि कालिदास को भी अब मल्लिका के समर्पण का एहसास हुआ है। नाटक के अंत में कालिदास को पता लगता है कि मल्लिका और विलोम का विवाह हो चुका है, तब वे जो वाक्य प्रयोग करते हैं वह भी उनकी मन की स्थिति का पूर्ण रूप से ज्ञान कराता है। कालिदास – समय अधिक शक्तिशाली है क्योंकि.... मल्लिका – क्योंकि? कालिदास – वह प्रतीक्षा नहीं करता। और दुःखद अंत के साथ यह नाटिका समाप्त हो जाती है।

निष्कर्ष

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है और भाषा में प्रयुक्त रस आदि हमें उसी भाव से जोड़ते हैं, जिनका प्रयोग उसमें हुआ है। कोई भी कृति महत्त्वपूर्ण तब बन जाती जब उसका जुड़ाव दर्शकों से अधिक से अधिक हो। जितना जुड़ाव कृति का पाठकों से होगा वह उतनी ही ज्यादा पाठकों के द्वारा स्वीकार की जाएगी। 'आषाढ़ का एक दिन'

नाटक एक ऐसी ही रचना है जो पाठकों को और दर्शकों को उस भाव भूमि में पहुंचा देती है, जिस भाव भूमि में वह लिखी गई है। सबसे अधिक इस कृति में श्रृंगार और करुण रस का प्रयोग हुआ है। और ये वह रस है जो पाठक और दर्शक के मन को द्रवीभूत कर देता है। इस नाटक में कई ऐसे दृश्य हैं जो रसों के कारण दर्शकों की आंखों में नमी ले आते हैं और इसका कारण यही है कि भाषा इतनी सुगठित और रसानुकुल है कि पाठक पढ़ते हैं और दर्शक जब वह संवाद सुनते हैं तो उनका जुड़ाव अपने आप ही हो जाता है। मोहन राकेश ने इस कृति में भावमय भाषा का प्रयोग किया है और वे इसमें पूर्ण रूप से सफल भी रहे हैं। इसलिए यह रचना आज भी प्रासंगिक और पाठकों तथा दर्शकों के बीच लोकप्रिय है। "आषाढ़ का एक दिन" नाटक सच में आषाढ़ के दिन की तरह ही है, जिसको पढ़ कर या देखकर पाठक और दर्शक अपने आपको भीगा हुआ पाते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भरतमुनि, (1984), नाट्यशास्त्र (प्रथम अध्याय, पृ. 9), वाराणसीः चौखंभा संस्कृत संस्थान।
2. भरतमुनि, (1984), नाट्यशास्त्र (प्रथम अध्याय, पृ. 9), वाराणसीः चौखंभा संस्कृत संस्थान।
3. शुक्ल, र. (2022), हिंदी साहित्य का इतिहास (पृ. 386), दिल्लीः प्रभात पेपरबैक्स।
4. शुक्ल, र. (2022), हिंदी साहित्य का इतिहास, दिल्लीः प्रभात पेपरबैक्स।
5. विश्वनाथ, आ. (1957), साहित्य दर्पण (पृ. 1), वाराणसीः चौखंभा विद्याभवन।
6. भरतमुनि, (1984), नाट्यशास्त्र (षष्टम अध्याय, पृ. 228), वाराणसीः चौखंभा प्रकाशन।
7. भरतमुनि, (1984), नाट्यशास्त्र (षष्टम अध्याय, पृ. 230), वाराणसीः चौखंभा प्रकाशन।
8. पाण्डेय, स., और पाण्डेय, ग. (2021), हिन्दी भाषा एवं साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास (पृ. 406), इलाहाबादः अभिव्यक्ति प्रकाशन।
9. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 15), दिल्लीः राजपाल प्रकाशन।
10. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 26), दिल्लीः राजपाल प्रकाशन।
11. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 27), दिल्लीः राजपाल प्रकाशन।
12. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 45), दिल्लीः राजपाल प्रकाशन।
13. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 92), दिल्लीरू राजपाल प्रकाशन।
14. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 103दृ104), दिल्लीः राजपाल प्रकाशन।
15. राकेश, म. (2023), आषाढ़ का एक दिन (पृ. 109), दिल्लीः राजपाल प्रकाशन।

❑❑❑